प्रकाशन तिथि : 15 अक्टूबर, 2022
प्रेषण तिथि : 19 अक्टूबर, 2022

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 26 | अंक 15 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

आत्मा ही अमृत का कुंड है : संरक्षक श्री

(बाड़मेर में विजयादशमी पर हुआ पथ प्रेरणा यात्रा का आयोजन)

भगवान ने हमें यह जीवन क्यों दिया है? चाहे विद्यार्थी हो, चाहे किसान हो, चाहे कर्मचारी हो, चाहे कोई ओहदेदार हो, सबको इस प्रश्न का उत्तर खोजना चाहिए और जिन्होंने खोजा है उनके जीवन में सुख, शांति और समृद्धि आई है। यह जीवन कहीं गफलत में ना निकल जाए क्योंकि ऐसा जीवन फिर कभी मिलने वाला नहीं है। मनुष्य जीवन को बड़े-बड़े महात्माओं ने दुर्लभ बताया है, उसके महत्व को समझें और फिर हम सब का जन्म इस भारत की पवित्र भूमि पर हुआ है यह और बड़े गर्व की बात है, और इससे भी आगे गर्व की बात यह है कि हमने राजस्थान में जन्म लिया है जो वीरों की भूमि है। उपर्युक्त बात श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक महोदय माननीय भगवान सिंह जी रोलसाहबसर ने रानी रूपादे संस्थान, बाड़मेर में 5 अक्टूबर को आयोजित पथ प्रेरणा यात्रा के समापन के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि क्षत्रिय त्याग का प्रतीक है। जो त्याग नहीं करता, उसकी संपत्ति नष्ट हो जाती है। वाल्मीकि रामायण में लिखा है कि समस्त संचयों का अंत विनाश है, लेकिन उनका सदुपयोग किया जाए तो वह विनाश नहीं हमको अमरता प्रदान करेगा। यह अमृत कहां प्राप्त होता है? हम थोड़ा सोचें, क्या विद्यालयों में इस प्रकार की शिक्षा, इस प्रकार के संस्कार मिलते हैं तो उत्तर आएगा - नहीं। विद्यालयों में एक निश्चित पाठ्यक्रम होता है, उसी को पढ़ना पड़ता है और वह मजबूरी में पढ़ा हुआ ज्ञान हमको अमृत तत्व प्रदान नहीं कर सकता। ऋषियों ने इस अमृत तत्व की खोज की थी और वर्तमान में बहुत सारी संस्थाएं इस प्रकार की है जो संसार के लिए, देश के लिए जीवन जीने की प्रेरणा देती हैं, ऐसी संस्थाओं से हम को जुड़ना चाहिए ताकि हम कुछ प्राप्त कर सकें। एकता की बात हम करते हैं, अच्छी बात है पर मैं यही कहा करता हूं कि एक भी बनो और नेक भी बनो। लेकिन नेक बनाने की विद्या कहां मिलती है? ना हमारे माता-पिता इस प्रकार से संस्कारित हैं जो यह शिक्षा देते हों, न हमारी मित्र मंडली ऐसी है, न स्कूल और कॉलेज इस प्रकार के हैं, तो फिर हम कहां जाएं? कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है। यह आत्मा ही अमृत का कुंड है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'विघ्नों की परवाह किए बिना तत्परता से बढ़ते रहें'

(जयपुर में दहेज विरोधी क्षत्रिय संघ का तीन दिवसीय सगाई समारोह संपन्न)

सामाजिक क्षेत्र में जो कुछ भी हम कर रहे हैं, उसमें तत्परता से लगे रहना चाहिए। धीरे धीरे निश्चित रूप से उस कार्य का असर होता है। जब हम इस यात्रा में निकलते हैं तो कई प्रकार के विघ्न भी आते हैं, लेकिन विघ्नों की परवाह किए बिना लगातार चलते रहना, इसी में सार है और इसी में सफलता भी है। जैसे यह दहेज विरोधी संघ की बात है, यह कार्य भी यदि निरंतर किया जाता है तो निश्चित रूप से बदलाव आता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ में भी टीका दहेज आदि की मांग का बिल्कुल मना है। उपर्युक्त बात श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने दहेज विरोधी क्षत्रिय संघ के तत्वावधान में शिव कुंज मैरिज गार्डन, वैशाली नगर जयपुर में आयोजित तीन दिवसीय सगाई समारोह में कही। (शेष पृष्ठ 7 पर)

मानवता को अपसंस्कृति से बचाने का दायित्व हमारा है: संघप्रमुख श्री

(मालवाड़ा और गडरा रोड में मा.प्र. शिविर संपन्न)

यह बैठने का समय नहीं है। यह सक्रियता का समय है, कुछ कर गुजरने का समय है और यह श्री क्षत्रिय युवक संघ का, पूज्य तन सिंह जी का हमें आह्वान है। यद्यपि आह्वान तो बहुत होते हैं, बहुत नारे लगते हैं, पूरा साहित्य भरा पड़ा है जागृत करने वाले और चेतावनी भरे श्लोक, गीत, प्रवचन आदि से लेकिन जागता वही है, सक्रियता वही ला सकता है जिसके अंदर चेतना होती है। जिसके अंदर निष्क्रियता प्रवेश कर गई है, जो निर्जीव हो गया है, उसे चाहे कितना ही भाषण दे दिया जाए वह चेतन अवस्था में नहीं आ सकता है। लेकिन यहां उलाहना उन लोगों को दिया जा रहा है जो चेतन है, जागृत हैं, यह उलाहना हमें दिया जा रहा है। क्यों? क्योंकि आप सब यहां पर सात दिन का सुख छोड़कर आए हैं। हमें भली-भांति पता है कि यहां पर किसी भी प्रकार की सुख सुविधा नहीं मिलने वाली हैं लेकिन फिर भी हम बार-बार आते हैं। क्यों आते हैं? हम अपने आप को बदलने के लिए आते हैं ताकि हमारे अंदर वह चेतन तत्व आ जाए जो श्री क्षत्रिय युवक संघ चाहता है। उपर्युक्त बात माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास ने जालौर के मालवाड़ा में 1 से 7 अक्टूबर तक आयोजित माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर में शिविरार्थियों का स्वागत करते हुए कही। उन्होंने कहा कि आज मानवता त्राहिमाम त्राहिमाम कर रही है और पूरा संसार गर्त में जा रहा है लेकिन उसको रोकने वाला कोई नहीं है। पूरा संसार यह देख रहा है कि कौन मानवता को बचाने आएगा। वह तब देखता है हमारी ओर, वह देखता है श्रेष्ठ कौम की ओर, वह देखता है कि जो श्रेष्ठ कर्म करने वाले हैं, जिनका इतिहास, जिनकी संस्कृति श्रेष्ठतम रही है, जिन्होंने आज तक इस संसार को बचाया है, राह दिखाई है, ऐसे लोग कौन हैं? इन सब प्रश्नों के उत्तर के लिए संसार कातर दृष्टि से हमारी ओर देख रहा है क्योंकि जो श्रेष्ठ व्यक्ति हैं उन्हीं से आशा की जा सकती है। गीता में आया है कि - 'यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः। स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।'

(शेष पृष्ठ 7 पर)

5 दिन में 10 प्रा.प्र.शि संपन्न, 1000 से अधिक शिविरार्थियों ने लिया प्रशिक्षण

1 से 5 अक्टूबर तक विभिन्न स्थानों पर श्री क्षत्रिय युवक संघ के दस प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुए जिनमें दो बालिका शिविर सम्मिलित हैं। इन शिविरों में 1000 से अधिक बालक-बालिकाओं ने संघ का प्राथमिक स्तर का प्रशिक्षण प्राप्त किया। जैसलमेर जिले के रामदेवरा गांव में बालिकाओं का चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 1 से 4 अक्टूबर तक आयोजित हुआ। शिविर संचालिका रतनकंवर सेतरावा ने शिविर के अंतिम दिन बालिकाओं को विदाई देते हुए कहा कि संघ ने इन चार दिनों के अल्प समय में जो हमारी गौरवशाली क्षात्र परम्पराओं, समाज के उज्ज्वल इतिहास, समाज की नारी शक्ति द्वारा किए गए जौहर व बलिदान की कहानियों और चचाओं के माध्यम से प्रेरणा दी है, उस प्रेरणा को सदैव जागृत रखें और अपने आचरण से अन्य बालिकाओं को भी प्रेरित करें। हमारे जीवन को श्रेष्ठ बनाने हेतु जो ग्राह्य है उसको ग्रहण करें और जो त्याज्य है उनका त्याग करें। इसके लिए हमें पूज्य तनसिंह जी द्वारा बताए गए इस मार्ग पर निरंतर चलना और शाखाओं में निरंतर जाकर इसका अभ्यास करना आवश्यक है। शिविर में क्षेत्र के बीस गांवो की कुल 132 बालिकाओं ने प्रशिक्षण लिया।

गुजरात में बनासकांठा प्रांत के अंतर्गत थराद तहसील के पीलूडा गांव में भी बालिकाओं का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 1 से 3 अक्टूबर तक आयोजित हुआ। जागृति बा हरदासकाबास ने शिविर का संचालन करते हुए बालिकाओं से कहा कि आप सामान्य नारी नहीं है बल्कि नारायणी का स्वरूप है, शक्ति का अवतार है। अपने स्वरूप को पहचान कर आप समाज में फैले विष को हटाकर बुराई रूपी महिषासुर से समाज को मुक्त करें। गांव के शैक्षणिक संकुल में आयोजित इस शिविर में वलादर, पीलुडा, सुईगाम, लोरवाडा, जजाम, ईढाटा, ढीमा, गोलवी, भाटवर, कोणोठी, नारोली, वरणोसरी, वावडीमेसरा, लेडाऊ, लिबोणी, धनकवाडा-धुणसोल, भापी, करबुण, सोनेथ, कुडा, फोरणा, गांगुदरा-जेटा, चारडा, वाघासण, जाडी आदि गांवों की 171 बालिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। पीलुडा गांव के सिद्धराज सिंह, दिग्विजय सिंह, नारायण सिंह, मंगलसिंह, नवघणसिंह, कनवर सिंह, दीपसिंह एवं अरविंद सिंह नारोली ने व्यवस्था में सहयोग किया। बनासकांठा जिला प्रमुख गुमान सिंह माडका, शंकरभाई चौधरी (चेयरमैन बनास डेयरी), गुलाबसिंह राजपूत (विधायक, थराद) तथा गेनीबहन ठाकोर (विधायक, वाव) ने भी शिविर में पहुंचकर श्री क्षत्रिय युवक संघ की कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी प्राप्त की। हरियाणा के हिसार में 2 से 5 अक्टूबर तक चार दिवसीय शिविर का आयोजन वेदपाल जी तंवर के फार्म हाउस पर हुआ। श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ ने शिविर का संचालन किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि हम यहां पर संगठित होने के लिए आए हैं। यह संगठन शक्ति और भक्ति का संगठन है और इस प्रकार से संगठित होकर ही हम क्षात्रधर्म का पालन कर सकेंगे। हम क्षात्रधर्म का पालन करें, यह हमारी सत्ता के स्वामी की चाह है और इसी के द्वारा संसार में देवत्व की स्थापना संभव है। उन्होंने शिविर में मिले हुए शिक्षण को स्थायी बनाने के लिए शाखा द्वारा निरंतर अभ्यास करने की बात कही। शिविर में हिसार, सिरसा, भिवानी, रोहतक और चरखी दादरी से स्वयंसेवकों ने भाग लिया। शेखावाटी संभाग में चूरू प्रांत के परसनेऊ गांव में भी इसी अवधि में प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ जिस का संचालन संभागप्रमुख खींव सिंह सुल्ताना ने किया।

उन्होंने शिविरार्थियों से अपनी संस्कृति और इतिहास को जानकर उसके अनुसार जीवन जीने और संघ से मिले प्रशिक्षण की निरंतरता को बनाए रखने की बात कही। दादा जी मंदिर के प्रांगण में आयोजित इस शिविर में परसनेऊ, बंडवा, पाबूसर आदि गांवों के 50 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। महेंद्र सिंह परसनेऊ ने ग्रामवासियों के साथ मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला। जयपुर संभाग में एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर श्री जगदम्बा राजपूत छात्रावास टोंक में 1 से 4 अक्टूबर तक सम्पन्न हुआ। शिविर संचालक राजेन्द्र सिंह बोबासर ने शिविरार्थियों से कहा कि संघ के शिविर में जो शिक्षा मिली है, उसे अब आत्मसात करना है तथा शाखा द्वारा इस शिक्षण का प्रसार करना है। हम क्षत्रिय हैं तो क्षत्रिय के अनुकूल आचरण करें व गीता में क्षत्रिय के जो सात गुण बताए गए हैं उन्हीं के अनुसार हमें जीवन जीना चाहिए। शिविर में खरेडा, पलेई, झीराना, गुलगांव, टोंक, निवाई, उनियारा, जयपुर आदि स्थानों से 100 युवाओं ने प्रशिक्षण लिया। चन्द्र वीर सिंह, हनुमान सिंह, जसवंत सिंह, रघुवीर सिंह, अरविंद सिंह, अभिमन्यु सिंह गुलगांव, हनुमान सिंह खरेडा आदि ने शिविर हेतु स्थानीय गांवों में सम्पर्क किया व शिविर की व्यवस्था का में सहयोग किया। प्रांत प्रमुख देवेन्द्र सिंह बरवाली सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। जयपुर संभाग में ही एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर लिसाड़ीया के शास्त्री बाल उच्च माध्यमिक विद्यालय में भी 2 से 5 अक्टूबर तक आयोजित हुआ। शिविर का संचालन करते हुए राम सिंह अकदडा ने कहा कि यहां जो अनुशासन आपने सीखा है उसे जीवन के सभी क्षेत्रों में लागू करेंगे तो आपकी सफलता सुनिश्चित रहेगी। शिविर में श्रीमाधोपुर क्षेत्र के लिसाड़ीया, महरौली, दिवराला, करीरी, नाथूसर, मऊ, नारेड़ा, भूनावास आदि गांवों के 170 स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण लिया। बीकानेर संभाग के लूणकरनसर मण्डल में धोलेरा गांव के भोमिया जी महाराज मंदिर परिसर में भी इसी अवधि में शिविर संपन्न हुआ। शिविर संचालक गुलाबसिंह आशापुरा ने कहा कि संघ अपने मूल उद्देश्य के अनुरूप निरन्तर समाज जागरण का कार्य कर रहा है। यह क्षत्रिय बालकों में संस्कार निर्माण की अनोखी पाठशाला है। शिविर में हूसंगसर, खारा, धोलेरा, कानासर व बीकानेर शहर के 50 बालकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। संभाग प्रमुख रेवंत सिंह जाखासर सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। भवानी सिंह, गजेंद्र सिंह, मगन सिंह, जेठू सिंह सहित सभी ग्रामवासियों ने व्यवस्था में सहयोग किया।

जैसलमेर संभाग के रामगढ़ प्रांत के दामोदरा गांव में भी 1 से 4 अक्टूबर तक शिविर संपन्न हुआ। शिविर का संचालन करते हुए पदम सिंह रामगढ़ ने कहा कि भारत देश के कण-कण में क्षत्रियों के शौर्य और बलिदान की गाथाएं भरी हुई हैं। मातृभूमि की रक्षार्थ हमारे पूर्वजों द्वारा किए गए बलिदानों का इतिहास साक्षी है। ऐसे गौरवशाली इतिहास और परंपरा को हमें संजो कर रखना है। शिविर में दामोदरा, दुजासर, सलखा, जोगा, पूनमनगर, राघवा, नगा, बरना, दवाड़ा, सांखला, आकल, खडेरो की ढाणी, रामगढ़, भोपा, डिग्गा आदि गांवों के 75 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। संभाग के नरसिंगो की ढाणी गांव में भी इसी अवधि में एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ। शिविर का संचालन करते हुए भोजराज सिंह तेजमालता ने शिविरार्थियों से कहा कि क्षत्रिय का आचरण ऐसा होना चाहिए जिसे देखकर सभी प्रेरणा और मार्गदर्शन ले सके। संघ अपनी सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली के द्वारा हमारे आचरण को ऐसा ही श्रेष्ठ बनाने का कार्य कर रहा है। शिविर में क्षेत्र के विभिन्न गांवों के 80 युवाओं ने प्रशिक्षण लिया। जैसलमेर के ही ताड़ना गांव में भी 2 से 5 अक्टूबर तक शिविर आयोजित हुआ। शिविर का संचालन करते हुए नरपत सिंह राजगढ़ ने कहा कि राष्ट्र के उत्थान के लिए क्षत्रिय का जागृत होना आवश्यक है। इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें अपने स्वधर्म और कर्तव्य की याद दिला रहा है। टावरीवाला, एटा, अवाय, बोडाना, नाचना, सत्याया, आसकंद्रा, दिधू, छायण, ताडाना, घंटियाली, सांकड़िया आदि गांवों के 160 युवाओं ने शिविर में प्रशिक्षण लिया। वरिष्ठ स्वयंसेवक गणपत सिंह अवाय सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। समस्त ग्रामवासियों ने मिलकर व्यवस्था में सहयोग किया।

विजयादशमी पर किया शस्त्र व शास्त्र का पूजन

5 अक्टूबर को विजयादशमी के उपलक्ष्य में देशभर में विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनमें स्वयंसेवकों व समाजबंधुओं ने शस्त्र और शास्त्र का पूजन किया। गोहिलवाड़ संभाग में भावनगर शहर प्रांत, खोडियार प्रांत और मोरचंद प्रांत का एक संयुक्त कार्यक्रम भावनगर के पास अवाणियां गांव में आयोजित किया गया जिसमें तीनों प्रांतों से स्वयंसेवक मौजूद रहे। पारंपरिक वेशभूषा में अवाणियां ग्राम पंचायत से रामदेव पीर मंदिर तक जुलूस का आयोजन हुआ। मंदिर में शस्त्र और शास्त्र का पूजन किया गया। संभाग के ही धोलेरा प्रांत के वल्लभीपुर में भी शस्त्र व शमी पूजन का कार्यक्रम आयोजित हुआ। वरिष्ठ स्वयंसेवक धर्मेंद्र सिंह आंबली ने दशहरे का सही अर्थ समझाते हुए कहा कि धर्मार्थ काम में आने वाला शस्त्र ही पूजने के योग्य है। शास्त्र के रूप में गीता का पूजन करवाते हुए उन्होंने गीता के संदेश को जीवन में उतारने की बात कही। वल्लभीपुर तहसील राजपूत समाज के प्रमुख दिलीप सिंह गोहिल रामपुर, बा कुंवरबा राजपूत छात्रावास वल्लभीपुर के प्रमुख कीर्ति सिंह रामणका तथा तहसील युवा राजपूत समाज के प्रमुख वीरमदेव सिंह गोहिल पच्छेगांव सहित सैकड़ों गणमान्य बंधु कार्यक्रम में उपस्थित रहे। सूरत शहर में राजस्थान क्षत्रिय राजपुत समाज द्वारा तुलसी गार्डन, पर्वतगाम में तथा राजस्थान राजपुत परिषद द्वारा पंडित श्यामा प्रसाद मुखर्जी हाल आई माता रोड़ अर्चना में विजयादशमी के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित किए गए। कार्यक्रमों में अतिथियों को यथार्थ गीता तथा समाज के प्रतिभावान छात्रों को बाल गीता भेंट की गई। मेहसाणा प्रांत में वीर दुगार्दास शाखा भेंसाणा में भी शस्त्र और शास्त्र पूजन किया गया।

जयपुर ग्रामीण दक्षिण पश्चिम प्रांत में श्री मुक्तेश्वर महादेव मंदिर भूमि, खातीपुरा, रोजदा व कनकपुरा में शस्त्र व शास्त्र का पूजन किया गया। प्रांत प्रमुख देवेंद्र सिंह बरवाली ने विजयादशमी के पर्व पर क्षत्रियत्व को जीवन में धारण करने की प्रेरणा लेने की बात कही। खींवसर में देउ शाखा द्वारा विजयदशमी पर्व के उपलक्ष्य में शस्त्र व शास्त्र पूजन कार्यक्रम श्री करणी माता जी मंदिर में रखा गया जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक भवानी सिंह मुंगेरिया ने कहा कि क्षत्रिय का जीवन हमेशा राष्ट्र और मानवता के लिए समर्पित होने के लिए होता है और उसी का श्रेष्ठ उदाहरण भगवान श्री राम है। श्री क्षत्रिय युवक संघ भी हमें श्री राम के आदर्शों के अनुरूप जीवन बनाने का अभ्यास करवा रहा है। प्रांत प्रमुख विक्रम सिंह सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। नागौर जिले की जायल तहसील के बरनेल गांव स्थित नागणेच्या माता मंदिर प्रांगण में भी शस्त्रपूजन का कार्यक्रम हुआ। नागौर संभाग प्रमुख शिम्भु सिंह आसरवा ने विजयदशमी पर्व के अवसर पर मेड़ता मंडल में भाटिया की ढाणी, गढ़ हरसोलाव, दधवाडा, छापरी, कुम्पडास, मेड़ता रोड बस्सी, श्री चारभूजा छात्रावास मेड़ता सिटी की शाखाओं में संपर्क किया व शाखा के स्वयंसेवकों से विजयदशमी पर्व के महत्त्व पर चर्चा की और बताया कि हमारे महान पूर्वज श्री राम की विजय के उपलक्ष्य में यह पर्व मनाया जाता है, उनसे प्रेरणा लेकर हम भी वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार हमारे भीतर की बुराईयों को हराकर सद्मार्ग पर बढ़ें। नागौर प्रांत प्रमुख उगम सिंह गोकुल भी सहयोगियों सहित यात्रा में सम्मिलित हुए। विजयादशमी के उपलक्ष्य में जयपुर में क्षत्रिय प्रगति संघ कनकपुरा के तत्वावधान में राजपूत प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित हुआ जिसमें विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले समाज के युवाओं को सम्मानित किया गया। पद्मश्री रामसिंह शेखावत व आईएफएस विक्रम सिंह गौड़ के मुख्य आतिथ्य में कार्यक्रम संपन्न हुआ। विजयादशमी के दिन वीर कुँवर सिंह शोध संस्थान, नोएडा के सम्राट पृथ्वीराज चौहान भवन में हवन तथा शस्त्र पूजन के साथ राव शेखा जी की जयंती भी मनाई गई। कार्यक्रम में नोएडा, गाजियाबाद के अलावा पूरे एनसीआर से समाजबंधुओं ने भाग लिया। दिल्ली के महाराणा प्रताप भवन केशवपुरम में भी समाजबंधुओं ने शास्त्र व शस्त्र का पूजन किया। राजपूताना समाज के ओनार सिंह, राष्ट्रीय करणी सेना के सुरेंद्र सिंह कुमास तथा अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के कार्यकर्ता उपस्थित रहे। फरीदाबाद के महाराणा प्रताप भवन में राजकुल सांस्कृतिक संस्थान द्वारा यज्ञ के साथ शास्त्र व शस्त्र पूजन किया गया जिसमें फरीदाबाद क्षेत्र के लोगों ने भाग लिया।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

उत्साह से मनाई राव शेखाजी की 589वीं जयंती

महाराव शेखा संस्थान के तत्वावधान में महाराव शेखा जी की जयंती प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी 8 अक्टूबर को सांप्रदायिक सद्भाव एवं सामाजिक एकता दिवस के रूप में श्री भवानी निकेतन स्नातकोत्तर महाविद्यालय के सेमिनार हॉल में समारोह पूर्वक मनाई गई। श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि महाराव शेखा जी के जीवन से महिलाओं के सम्मान, सांप्रदायिक सद्भाव, मातृभूमि से प्रेम और सबसे बढ़कर क्षात्रधर्म के पालन की प्रेरणा मिलती है। संस्थान के सचिव संपत सिंह धमोरा ने बताया कि इस अवसर पर सर्वधर्म समभाव पर विद्वानों द्वारा चर्चा की गई तथा ख्यातनाम भजन गायक प्रोफेसर घनश्यामदास जादौन द्वारा भजन की प्रस्तुति दी गई। संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष जालिम सिंह आसपुरा कार्यकताओं सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। महाराव शेखाजी संस्थान जोधपुर के तत्वावधान में 6 अक्टूबर को महाराव शेखाजी की 589वीं जयंती व प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन बीजेएस कॉलोनी के राजपूत सभा भवन में समारोह पूर्वक हुआ। आईएएस राजेंद्र सिंह शेखावत ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि राव शेखा जी का पूरा जीवन संघर्ष और कर्मठता का था। उन्होंने आदर्श जीवन जीते हुए सभी को साथ लेकर चलने का प्रयास किया और धर्म व समाज की रक्षा की। वे नारी सम्मान के लिए सदैव प्रतिबद्ध रहे तथा उसी के लिए अपना बलिदान भी दिया। आरपीएससी के पूर्व अध्यक्ष शिव सिंह राठौड़ ने कहा कि राव शेखा जी ने उस समय भी समाजवाद के आदर्श को चरितार्थ किया और वे सभी समाजों को साथ लेकर चले। समता राम महाराज ने राव शेखाजी के जीवन से प्रेरणा लेकर संकल्प मजबूत रखने व कष्ट सहिष्णु बनने की बात कही। राव शेखाजी संस्थान के संरक्षक प्रो. कल्याण सिंह शेखावत व जेडीए उपायुक्त मृदुला शेखावत ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में समाज की प्रतिभाओं को प्रशस्ति पत्र व स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया। स्वरूप सिंह सांगलिया ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस अवसर पर 21 युवाओं ने रक्तदान भी किया। महाराव शेखा संस्थान द्वारा वेटरनरी कॉलेज बीकानेर में भी महाराव शेखा जी और राव बणीर की जयंती संयुक्त रूप में मनाई गई। पूर्व सिंचाई मंत्री देवी सिंह भाटी, बीकानेर पूर्व की विधायक सिद्धि कुमारी, बजरंग सिंह रॉयल, अखिलेश प्रताप सिंह, ब्रिगेडियर जगमाल सिंह राठौड़, कर्ण प्रताप सिंह, भवानी सिंह शेखावत, नरेंद्र सिंह, सुमन सांडवा आदि वक्ताओं ने महाराव शेखाजी एवं राव बणीर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का वर्णन करते हुए उनके प्रति श्रद्धा प्रकट की और साथ ही उनके जीवन से प्रेरणा लेकर समाज, राष्ट्र, धर्म और संस्कृति के हित में कार्य करने का आह्वान किया। समारोह के दौरान खेल व शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धि प्राप्त करने वाली समाज की 15 प्रतिभाओं को सम्मानित भी किया गया, साथ ही पांच पुस्तकों का विमोचन भी कार्यक्रम के दौरान किया गया। जयपुर में अमरसर कस्बे के शेखागढ़ में भी शेखा जी की जयंती भव्य रुप में मनाई गई। पूर्व विधानसभा उपाध्यक्ष राव राजेंद्र सिंह शाहपुरा ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि देश को आज के समय में जिस सांप्रदायिक सौहार्द की सर्वाधिक आवश्यकता है, उसकी प्रेरणा के लिए यदि कोई आदर्श व्यक्तित्व है तो वह शेखाजी हैं। पूर्व सांसद गोपाल सिंह ईडवा ने शेखाजी के जीवन से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने की बात कही। पूर्व विधानसभा अध्यक्ष दीपेंद्र सिंह शेखावत के मुख्य आतिथ्य में संपन्न कार्यक्रम में क्षेत्र के कई जनप्रतिनिधि व गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान अतिथियों ने शिक्षाविद मान सिंह शेखावत के सानिध्य में महाराव शेखा जी के जीवन चरित्र पर तैयार वेबसाइट का लोकार्पण तथा भगवान सिंह बाडलवास द्वारा लिखित 'शेखावाटी के स्वतंत्रता सेनानी - डूंगजी जवाहर जी व बलजी भूरजी' पुस्तक का विमोचन भी किया।

संपादकीय

संघर्ष में गरिमा का आधान करता है क्षत्रियत्व

संघर्ष इस संसार का प्राकृतिक सत्य है। द्वंद्वात्मकता सृष्टि का मूल है और इसी द्वंद्वात्मकता के कारण अणु से लेकर ब्रह्मांड तक में संघर्ष की धारा चिर प्रवाहित है। इसी द्वंद्वात्मक सृष्टि का अंग होने से मनुष्य के जीवन का भी कोई भी अंश संघर्ष से मुक्त नहीं है, न ही मनुष्य की कोई कृति संघर्ष से सर्वथा मुक्त रह सकी है। मनुष्य निर्मित परिवार, समाज, राष्ट्र या अन्य किसी भी व्यवस्था को भी बाह्य और अंतर्संघर्ष का सामना करते ही रहना पड़ता है। एक अर्थ में संघर्ष यद्यपि किसी भी व्यक्ति, व्यवस्था या वस्तु को क्षीण करने वाला कारक है परंतु एक दूसरे अर्थ में संघर्ष सृष्टि के अस्तित्व के लिए उसी भांति आवश्यक है जैसे जीवन के अस्तित्व के लिए सूर्य का आतप। यह एक भिन्न विषय है परंतु इतना तो निश्चित ही है कि मनुष्य के अस्तित्व का कोई भी अंश संघर्ष से अछूता नहीं है और चाहे-अनचाहे उसे दैहिक, दैविक और भौतिक संघर्ष में नियोजित होना ही पड़ता है। संघर्ष की इस अनिवार्यता और प्राकृतिकता को ना समझ सकने वाला पश्चिम संघर्ष मुक्त जीवन के निर्माण का प्रयास करता रहा है और अभी भी कर रहा है और उसी प्रयास में वह नित नए और जटिल संघर्षों को जन्म देता जा रहा है। इसी कारण वहां व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र अत्यधिक सुविधा संपन्न होते हुए भी नए संघर्षों के जाल में फंसते जा रहे हैं। परिवारों की टूटन, सामाजिक तनाव, तानाशाही, राष्ट्रवाद, निरंकुश साम्यवाद और युद्धलिप्सा जैसी अनेक समस्याएं इसीलिए पश्चिम और उसका अनुसरण करने वाले समाज और राष्ट्रों में निरंतर बढ़ती जा रही हैं। इसके विपरीत भारत ने संघर्ष की इस अनिवार्यता और प्राकृतिकता को स्वीकार करते हुए उसी के अनुरूप पारिवारिक, सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था को बहुत पहले विकसित किया था जिसमें प्राकृतिक संघर्ष को संतुलित करते हुए उसी को सभ्यता के विकास में ईंधन के रूप में प्रयुक्त किया गया था। यही कारण रहा कि भारत सदैव संघर्षों में घिरा रहने के बाद भी बिखरने की बजाय सभी दृष्टियों से उन्नत होता रहा और यह प्रक्रिया तब तक चलती रही जब तक कि भारत ने संघर्ष से भयभीत होकर और इस भय के कारण संघर्ष द्वारा संघर्ष को समाप्त करने का अवैज्ञानिक प्रयत्न करने वाली अर्द्धसंस्कृत सभ्यताओं के संपर्क में आकर अपने अनुभूत सत्य को भुला नहीं दिया।

भारत द्वारा संघर्ष को संतुलित करने की उक्त प्रक्रिया का श्रेष्ठतम उदाहरण यदि कोई है तो वह क्षत्रिय है। क्षत्रिय से अधिक संघर्षपूर्ण जीवन भला किसका हो सकता है और फिर भी क्षत्रिय से अधिक गरिमापूर्ण और उदात्त जीवन जीने वाली कौम का उदाहरण भी संसार में अन्यत्र कहीं नहीं मिलता। हमारे पूर्वजों ने जिस प्रकार से संघर्ष में गरिमा का आधान किया था वह इतना अनूठा था कि उनसे बढ़कर नायक जनमानस को ही नहीं, रचनाकारों की कल्पनाओं को भी आज तक भी नहीं मिलते हैं। वनवास के तप में धर्मयुद्ध के लिए वनवासियों का संगठन करने वाला मयार्दा पुरुषोत्तम का आचरण हो या महायुद्ध की विभीषिका के बीच गीता रूपी परमसत्य का निर्झर बहाने वाले चक्रधर की स्थितप्रज्ञता हो, इनसे बढ़कर संघर्ष को गरिमामयी बनाने के उदाहरण कहां मिलेंगे? युद्ध जैसा घोर कृत्य भी जहां खेल की भांति नियमों से बांधा गया हो, प्रेम की पराकाष्ठा जहां सतीत्व की अग्नि बनी हो, उस कौम के आंगन से बढ़कर गरिमा व संघर्ष का समन्वय और कहां मिलेगा? क्षत्रियत्व का तो अर्थ ही संघर्ष में गरिमा का आधान करना है। संघर्ष यदि प्रकृति का सत्य है तो क्षत्रियत्व की गरिमा उस संघर्ष का संतुलन है। किंतु, आज के परिप्रेक्ष्य में हम अपने चारों ओर की स्थिति पर दृष्टिपात करें तो पाएंगे कि भारत एक समाज और राष्ट्र के रूप में अनेक प्रकार के संघर्षों से घिरा हुआ है लेकिन उन संघर्षों को संतुलित करके उन्हें विकास की सीढ़ी बनाने की क्षमता रखने वाला सत्य उसने खो दिया है। परिणाम स्वरूप कभी विश्व को संघर्षपूर्ण विकास यात्रा के लिए मार्गदर्शन प्रदान करने वाला भारत आज स्वयं अपने ही संघर्षों से क्षीण होता जा रहा है। भारत को इस स्थिति से निकालने का दायित्व और क्षमता केवल क्षत्रिय की ही है। केवल क्षत्रियत्व की गरिमा ही इन संघर्षों के विषकारी प्रभाव को रोककर इन्हें भारतीय समाज के दिशादर्शन का साधन बना सकती है। लेकिन क्षत्रिय यदि स्वयं अपने पथ से भटक गया है तो वह अपना यह गुरूतर दायित्व निभा नहीं पाएगा, इसीलिए सर्वप्रथम क्षत्रिय को उसके स्वधर्म के पालन में प्रवृत्त करना आवश्यक है। यही कार्य श्री क्षत्रिय युवक संघ कर रहा है।

गरिमापूर्ण संघर्ष या संघर्ष में गरिमा का आधान हमारे स्वधर्म का एक महत्वपूर्ण अंग है। किंतु यह विचारणीय है कि क्या हम ऐसा कर पा रहे हैं? संघर्ष चूंकि इस संसार का प्राकृतिक सत्य है और संघर्ष में प्रवृत्त होना हमारे रक्त की तासीर है इसलिए हम विभिन्न प्रकार के संघर्ष में प्रवृत्त तो होते ही हैं। प्रश्न तो यह है कि क्या हम उस संघर्ष में गरिमा का पालन कर रहे हैं या नहीं? निश्चित रूप से हमारे सामने आज नए प्रकार के संघर्ष हैं किंतु जब तक हम उन्हें गरिमा प्रदान नहीं करते तब तक वे संघर्ष संतुलित नहीं हो सकेंगे। समाज के रूप में, कौम के रूप में हमारे सामने अनेक प्रकार की चुनौतियां हैं, किंतु उन चुनौतियों का सामना करते समय यदि हमारा संघर्ष गरिमापूर्ण नहीं हो तो हम क्षत्रियत्व के धारक नहीं कहे जा सकते और बिना क्षत्रियत्व के हम क्षत्रिय नहीं बन सकते। इसी बात को समझ कर श्री क्षत्रिय युवक संघ समाज की युवा पीढ़ी को गरिमामयी जीवन जीने का अभ्यास अपनी संघर्षपूर्ण प्रणाली के माध्यम से करवा रहा है जिससे वे ना केवल व्यक्ति रूप में अपने संघर्षों को गरिमापूर्ण ढंग से संतुलित करें बल्कि उनके माध्यम से सामाजिक संघर्ष को भी गरिमा प्रदान की जा सके। इसलिए जब भी हम किसी भी प्रकार के संघर्ष में प्रवृत्त होते हैं, जो कि अनिवार्य रूप से हम होते ही हैं, तो यह आत्मचिंतन अवश्य करें कि उस संघर्ष में हम गरिमापूर्ण ढंग से प्रवृत्त हुए हैं अथवा नहीं। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि व्यक्तित्व की गरिमा कोई शिष्टाचार की विधि या व्यवहार की कला नहीं है बल्कि वह हमारे भीतर के सच्चिदानंद स्वरुप की लपट है जो उस स्वरूप तक पहुंच बनाने से ही हमारे व्यक्तित्व को आलोकित करती है। इसलिए संघ की साधना हमें अपने स्वरूप की पहचान कराती है और उसी के फल स्वरुप हमारा जीवन गरिमामयी बन सकता है और ऐसा जीवन ही प्राकृतिक संघर्ष को संतुलित कर उसे सामाजिक चेतना को उच्चतर स्तरों तक ले जाने की सीढ़ी बना सकता है। ऐसा होने पर ही संघर्षों से वास्तविक मुक्ति भी संभव है क्योंकि केवल चेतना ही सृष्टिगत द्वंद्वात्मकता से परे है और उस चेतना में स्थित होना ही संघर्षों से पार होने का भी एकमात्र उपाय है।

मेवाड़ का गुहिल वंश

महाराणा क्षेत्रसिंह के बाद उनका पुत्र लक्षसिंह (लाखा) वि.सं. 1489 में चित्तौड़ का शासक बना। महाराणा लक्षसिंह ने युवराज पद के दौरान ही सैन्य अभियानों व कुशल प्रबंधन से अपनी योग्यता प्रदर्शित कर दी थी। महाराणा लक्षसिंह के समय बदनोर के पहाड़ी क्षेत्र में मेदों (मेरों) ने राज्य में लूटपाट कर अव्यवस्था उत्पन्न कर दी थी, महाराणा ने उन पर चढ़ाई कर उन्हें परास्त कर बदनोर के पहाड़ी प्रदेश को अधीन कर लिया। महाराणा लक्षसिंह के शासन काल में मगरा क्षेत्र के जावर गांव में चांदी की खान निकल आई, जिसमें से चांदी और सीसे का खनन होने लगा, जिससे राज्य की आय में अत्यधिक वृद्धि हुई। इस खान के कारण जावर का भी विकास हुआ और वो एक समृद्ध कस्बे में बदल गया, जहां अनेक मंदिरों का निर्माण भी हुआ। महाराणा लक्षसिंह ने काशी, प्रयाग और गया के तीर्थस्थलों को मुस्लिम शासकों से कर मुक्त करवाया। महाराणा लक्षसिंह ने अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण और बाद में खिज्र खां के चित्तौड़ पर शासन के दौरान तोड़े गए मंदिरों, तालाबों, महलों का पुनर्निर्माण करवाया। महाराणा लक्षसिंह की माता के द्वारका तीर्थयात्रा के दौरान काठियावाड़ क्षेत्र में काशे (एक लुटेरी कौम) ने तीर्थयात्री दल पर आक्रमण कर दिया। इस दौरान शार्दूलगढ़ के रावसिंह डोडिया अपने दो पुत्रों कालू व धवल के साथ उनकी रक्षार्थ वहां आ पहुंचे। युद्ध में इनकी विजयी हुई पर रावसिंह डोडिया वीरगति को प्राप्त हुए। कालू व धवल दोनों भाइयों ने राजमाता को मेवाड़ की सीमा तक पहुंचाया, महाराणा ने यह सब जान कर दोनों भाइयों को मेवाड़ आमंत्रित करके उन्हें रतनगढ़, नन्दराय, मसूदा की जागीर प्रदान कर अपना उमराव बनाया। महाराणा लक्षसिंह की वृद्धावस्था के समय मंडोर के राठौड़ चूंडा का पुत्र रणमल अपने पिता से रुष्ट होकर महाराणा लक्षसिंह की सेवा में आ गया था। महाराणा लक्षसिंह ने जब एक दिन दरबार में बैठे अपने सरदारों के चर्चा कर रहे थे तब रणमल की बहिन हंसाबाई के संबंध के नारियल महाराणा लक्षसिंह के ज्येष्ठ कुंवर चूंडा के लिए आए, उस समय महाराणा ने हंसी में कहा कि जवानों के नारियल आते है, हमारे जैसे वृद्धों के लिए कौन लाए। यह बात सुनते ही पितृभक्त चूंडा ने रणमल से कहा कि मेरे पिता ने भले ही मजाक में वह कथन कहा हो पर अब आपकी बहिन मेरी माता स्वरूपा है अतः आप अपनी बहिन का विवाह मेरे पिता से करें तब रणमल ने कहा कि आप ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण राज्य के उत्तराधिकारी हैं इसीलिए ये प्रस्ताव आपके लिए आया है यदि मेरी बहिन का विवाह आपके पिता से होता है तो उनसे उत्पन्न संतान को तो आपकी चाकरी करनी पड़ेगी। तब पितृभक्त चूंडा ने प्रतिज्ञा की कि आपकी बहिन से मेरे पिता का जो पुत्र होगा वह मेवाड़ का स्वामी होगा और मैं उनका सेवक बनकर रहूंगा। महाराणा लक्षसिंह का विवाह हंसाबाई से हुआ जिससे उन्हें मोकल नामक पुत्र की प्राप्ति हुई, महाराणा लक्षसिंह ने अपने अंतिम समय पर मोकल की रक्षा का दायित्व चूंडा को सौंपा (क्रमशः)

सिवाना में प्रांतीय स्नेहमिलन व कार्ययोजना बैठक सम्पन्न

श्री क्षत्रिय युवक संघ के सिवाना प्रान्त का स्नेहमिलन 2 अक्टूबर को श्री कल्ला रायमलोत राजपूत होस्टल सिवाना में संभाग प्रमुख मूलसिंह काठाड़ी की उपस्थिति में संपन्न हुआ। काठाड़ी ने स्वयंसेवको को सम्बोधित करते हुए कहा कि समाज को संगठित करने का कार्य सरल नहीं है और इसके लिए हमारे सामूहिक प्रयत्न की आवश्यकता है। इसलिए हम सब अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए अपने दायित्व का निर्वहन करें। बैठक में प्रांत में लगने वाले बालक व बालिका वर्ग शिविरों की व्यवस्था, शाखाओं, संघशक्ति-पथप्रेरक सदस्यता आदि बिंदुओं पर चर्चा हुई। प्रान्त प्रमुख मनोहरसिंह सिणेर सहयोगियों सहित उपस्थित रहे।

सामाजिक कुरीतियों पर लगाई पाबंदी

वागड़ क्षत्रिय महासभा की बैठक बांसवाड़ा के डांगपाड़ा स्थित राजपूत छात्रावास भवन में 9 अक्टूबर को आयोजित हुई जिसमें समाज में व्याप्त कुरीतियों को मिटाने के संबंध में विमर्श किया गया। महासभा के अध्यक्ष राजेंद्र सिंह आनंदपुरी ने बताया कि बैठक में समाज में व्याप्त शराब, बिंदोला प्रथा, विवाह में बैंड बाजा, टीका प्रथा जैसी 22 कुरीतियों पर पूर्ण पाबंदी लगाने का निर्णय हुआ। इस पाबंदी का उल्लंघन करने वाले परिवार पर पहले ग्राम स्तर पर, फिर चौखला स्तर पर और फिर जिला स्तर पर पाबंदी लगाने का भी निर्णय किया गया। निर्णय के पालन हेतु ग्राम स्तर पर निगरानी कमेटी बनाने का भी निर्णय बैठक में लिया गया।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
01.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	19.10.2022 से 22.10.2022 तक	**बड़ली**, अजमेर। सुमेर कृषि फार्म बड़ली (विजयनगर)
02.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	19.10.2022 से 22.10.2022 तक	**कोटडा**, बांसवाड़ा।
03.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	19.10.2022 से 22.10.2022 तक	**केलपुंज माताजी का मंदिर**, किनसरिया (नागौर)।
04.	मा.प्र.शि. (बालक)	25.10.2022 से 30.10.2022 तक	**मुम्बई (महाराष्ट्र)**।
05.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	26.10.2022 से 29.10.2022 तक	**हाथीतला (बाड़मेर)**, बाड़मेर से धोरीमन्ना एनएच-68 पर रणसी होटल से 2 किमी दूर हाथीतला।
06.	मा.प्र.शि. (बालक)	26.10.2022 से 01.11.2022 तक	**आसकी ढाणी (नागौर)**, डीडवाना-सालासर रोड पर।
07.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	27.10.2022 से 30.10.2022 तक	**गलोट**, प्रतापगढ़।
08.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	28.10.2022 से 31.10.2022 तक	**डीडवाना (नागौर)**, शहर में।
09.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	28.10.2022 से 31.10.2022 तक	**चाकसू (जयपुर)**, अपनत्व-फ्यूचर जोन एकेडमी, चाकसू। सम्पर्क: अर्जुनसिंह गोनिया-98281-29675
10.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	28.10.2022 से 31.10.2022 तक	**हमीरा**, जैसलमेर।
11.	मा.प्र.शि. (बालक)	28.10.2022 से 03.11.2022 तक	**धोलेरा (अहमदाबाद)**, अहमदाबाद से भावनगर रूट पर।
12.	मा.प्र.शि. (बालिका)	28.10.2022 से 03.11.2022 तक	**धंधूका (अहमदाबाद)**, धोलेरा से 27 किमी. दूर।
13.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	05.11.2022 से 08.11.2022 तक	**झालरापाटन (झालावाड़)**, आनन्द धाम नवलखा किला।
14.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	05.11.2022 से 08.11.2022 तक	**कोटा**।
15.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	06.11.2022 से 09.11.2022 तक	**कीता**, जैसलमेर।
16.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	11.11.2022 से 14.11.2022 तक	**फरीदाबाद**, हरियाणा।
17.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	17.11.2022 से 20.11.2022 तक	**जैनपुर**, उत्तरप्रदेश।
18.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	26.11.2022 से 28.11.2022 तक	**नैनावा (बनासकांठा)**, गुजरात।
19.	मा.प्र.शि. (बालक)	25.12.2022 से 31.12.2022 तक	**डूंगरगढ़**, बीकानेर।
20.	मा.प्र.शि. (बालक)	25.12.2022 से 31.12.2022 तक	**आलोक आश्रम**, बाड़मेर।
21.	मा.प्र.शि. (बालक)	25.12.2022 से 31.12.2022 तक	**वंदे मातरम स्कूल**, पाली।
22.	मा.प्र.शि. (बालक)	25.12.2022 से 31.12.2022 तक	**नाचना**, जैसलमेर
23.	मा.प्र.शि. (बालक)	25.12.2022 से 31.12.2022 तक	**तोसनिवाल धर्म शाला धनौप माता मन्दिर परिसर**, धनौप जिला भीलवाड़ा (केकड़ी से बिजयनगर गुलाबपुरा प्राईवेट बस मार्ग पर वाया फुलिया कलां वाली बस से माता जी मन्दिर मार्ग पर उतरें। मेवाड़ वागड़ हाड़ौती से आने वाले वाया शाहपुरा भीलवाड़ा होकर फुलियाकला पुलिस स्टेसन के सामने उतरें । वहां से बिजयनगर जाने वाली प्राईवेट बस पकड़कर मन्दिर मार्ग पर उतरें । अजमेर से आने वाले बिजयनगर रेल्वे फाटक से धनौप होकर जाने वाली केकड़ी की बस से पहुंचे। जयपुर से आने वाले वैशाली डिपो बस जयपुर भीलवाड़ा वाया केकड़ी फुलिया से पुलिस स्टेशन उतरें व प्राईवेट बस से मन्दिर उतरें । **संपर्क सूत्र** 9602246116, 9950286101, 9799278932
24.	मा.प्र.शि. (बालिका)	25.12.2022 से 31.12.2022 तक	**जयमल कोट पुष्कर**, अजमेर **संपर्क सूत्र** 9414005449, 9749922222, 9413040742

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

दीपसिंह बैण्यकाबास, शिविर कार्यालय प्रमुख

हर्षिता ने ताइक्वांडो में जीता रजत पदक

बीकानेर निवासी हर्षिता कंवर शेखावत सुपुत्री रघुनाथ सिंह ने नेपाल ने आयोजित वर्ल्ड ताइक्वांडो चैम्पियनशिप में भारत के लिए रजत पदक प्राप्त किया है। 16 देशों के 90 खिलाड़ियों के बीच प्रतियोगिता में पदक प्राप्त कर हर्षिता ने समाज, बीकानेर एवं सम्पूर्ण देश का मान बढ़ाया है।

ऋत्विका बा चूड़ासमा को मिला स्वर्ण पदक

गुजरात के आंबली गांव की निवासी ऋत्विका बा चूड़ासमा ने भावनगर स्थित ज्ञानमंजरी इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस कॉलेज में बीएससी फाइनल में डिस्टिंक्शन ग्रेड प्राप्त करने के साथ ही कॉलेज में प्रथम स्थान भी प्राप्त किया जिसके लिए उन्हें स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। वे श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक धर्मेंद्र सिंह आंबली की पुत्री है।

बालम सिंह आकोड़ा बने शारीरिक शिक्षा शिक्षक संघ के जिलाध्यक्ष

बालम सिंह आकोड़ा को राजस्थान शारीरिक शिक्षा शिक्षक संघ के बाड़मेर में आयोजित जिला स्तरीय सम्मेलन में निर्विरोध जिलाध्यक्ष चुना गया। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रामूबाई नेहरूनगर में आयोजित कार्यक्रम में निर्वाचित नवीन कार्यकारिणी को निर्वाचन अधिकारी पर्वत सिंह राठौड़ द्वारा शपथ दिलाई गई। बालम सिंह आकोड़ा श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक हैं।

मंजीत सिंह बडोड़ा गाँव का सहायक आचार्य (हिंदी) परीक्षा में 27वां स्थान

मंजीत सिंह पुत्र पूनम सिंह भाटी (पटवारी) निवासी बडोड़ा गाँव ने सहायक आचार्य (हिंदी) की परीक्षा में राजस्थान में 27वां स्थान प्राप्त किया है। उन्होंने यह उपलब्धि हासिल करके ग्रामवासियों और समाजबंधुओं को गौरवान्वित किया है।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलखा हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

समारोहपूर्वक मनाई पनराज जी की जयंती

10 अक्टूबर को जैसलमेर शहर में स्थित रियासतकालीन देवस्थान सुली डूंगर पर लोक देवता गौ रक्षक वीर श्री पनराज जी जुंझार का जयंती समारोह भव्य रूप में आयोजित हुआ। रविवार की रात्रि में भजन संध्या का आयोजन किया गया एवं सोमवार सुबह 11:15 बजे भव्य जयंती समारोह का शुभारंभ हुआ। लोक देव के देवस्थान पर अतिथियों द्वारा विधिवत पूजा अर्चना की गई, पुष्पजंली अर्पित कर आशीर्वाद लिया। कार्यक्रम संचालन लीलू सिंह बड़ा, कंवराज सिंह नगा ने किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए नगर परिषद सभापति हरिवल्लभ कल्ला ने कहा कि लोक देवता गौरक्षक वीर श्री पनराज जी एक देवपुरुष है जिन्होंने जैसाण के तख्त, मातृभूमि, गौ माता और ब्राह्मण की रक्षा के लिए अपना जीवन न्यौछावर कर दिया। उनका दिव्य इतिहास हम सब के लिए प्रेरणास्त्रोत और स्मरणीय है। श्री क्षत्रिय युवक संघ के जैसलमेर के संभाग प्रमुख तारेंद्र सिंह झिनझिनयाली ने कहा कि हमारे जैसाण धरा का इतिहास अपने आप में अद्भुत है, जहां के कण-कण में शौर्य गाथाएं भरी पड़ी है। यहां के रणबांकुरे वीरों ने अपनी तलवारों की चमक से यहां के इतिहास को स्वर्णिम बना दिया। इसी तरह से वीर झुंझार पनराज जी जैसाण धरा के रक्षक कहलाए क्योंकि उन्होंने जैसलमेर की रक्षा के रूप में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। ऐसे गौरवशाली इतिहास का सरंक्षण व इस स्थान की रक्षा करना हम सबका दायित्व है। उन्होंने कहा कि पिछले वर्ष श्री क्षत्रिय युवक संघ के तत्वावधान में बड़े स्तर पर पनराजसर में कार्यक्रम आयोजित किया गया था जिसमें हजारों की तादाद में लोग आए। इससे समाज में ऐसे बलिदानी वीरों को स्मरण करने के प्रति जागृति बढ़ी। जुझार वीर पनराज जी के शौर्य व पराक्रम की विस्तृत जानकारी शिक्षाविद् व इतिहासकार तन सिंह काठा ने दी। दीप सिंह रणधा ने वीर रस छंद की प्रस्तुति दी। जिला प्रमुख प्रताप सिंह ने लोक देवता के संस्कारों से युवाओं को सीख लेने की बात कही। भाजपा जिला अध्यक्ष चंद्र प्रकाश शारदा, सुनीता भाटी, छुग सिंह सोढ़ा ने भी अपने विचार रखे। श्री पनराज सेवा समिति के अध्यक्ष हमीर सिंह बड़ा ने समिति का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में मेघराज सिंह बारु, सुजान सिंह हडड़ा, सवाई सिंह गोगली, मनोहर सिंह दामोदरा, सवाई सिंह देवड़ा, हिंदू सिंह म्याजलार, सुरेंद्र सिंह बडोड़ा गांव, नरेंद्र सिंह सहित अनेकों समाजबंधु कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

अहमदाबाद और लेकावाडा में स्नेहमिलन संपन्न

30 सितंबर को अहमदाबाद स्थित गोता समाज भवन में श्री राजपूत विद्या सभा द्वारा स्नेहमिलन आयोजित किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए केंद्रीय जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने इतिहास से प्रेरणा लेकर वर्तमान समय में समाज के लिए योगदान देने तथा उसके लिए चिंतन करने की बात कही। गुजरात सरकार में पूर्व कैबिनेट मंत्री भूपेंद्र सिंह चूड़ासमा ने चूड़ासमा राजपूत समाज के बंधारण निर्माण के शताब्दी वर्ष के आयोजन के बारे में विस्तृत जानकारी दी एवं सभी से उसमें सहभागिता निभाने का आह्वान किया। कार्यक्रम में राजपूत विद्या सभा के पदाधिकारी एवं श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक दीवान सिंह काणेटी सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। 1अक्टूबर को गांधीनगर के लेकावाड़ा गांव के निकट स्थित राजपूत आईएएस एंड कैरियर स्टडी सेंटर एकेडमी में भी कार्यक्रम रखा गया। विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए केंद्रीय जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने कहा कि हमें जहां भी अवसर मिले उसका लाभ उठाते हुए आगे बढ़ना चाहिए। लेकिन हम कितना भी आगे बढ़ें पर हमारा सामाजिक भाव बना रहना चाहिए, क्योंकि सामाजिक भाव के बिना समाज का विकास नहीं हो सकता। वरिष्ठ स्वयंसेवक दीवान सिंह काणेटी तथा प्रांत प्रमुख दिग्विजय सिंह पलवाड़ा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। उल्लेखनीय है कि उक्त कोचिंग संस्थान से अब तक लगभग पंद्रह हजार विद्यार्थी सरकारी नौकरी प्राप्त कर चुके हैं।

महाराजा जसवंत सिंह छात्रावास में भजन संध्या का आयोजन

जसवंत छात्रावास जोधपुर में प्राचीन चामुंडा माता के प्रांगण में विशाल भजन संध्या का आयोजन किया गया। अतिथियों द्वारा महाराजा जसवंत सिंह की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर उन्हें स्मरण किया गया। आयोजन में विश्वविद्यालय के प्रोफेसर, खेल अधिकारी, विश्वविद्यालय कर्मचारी, वर्तमान व पूर्व छात्रसंघ पदाधिकारी, छात्र संगठनों के पदाधिकारी, समाजसेवी तथा राजनेताओं को जसवंत छात्रावास का स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के जोधपुर संभागप्रमुख चंद्रवीर सिंह देणोक सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

फरीदाबाद में मनाई क्षत्रिय सम्राट मिहिरभोज प्रतिहार की जयंती

क्षत्रिय सम्राट मिहिर भोज प्रतिहार जी की जयंती महाराणा प्रताप भवन, सेक्टर 8, फरीदाबाद में 09 अक्टूबर को समारोह पूर्वक मनाई गई। कार्यक्रम में मिहिर भोज प्रतिहार जी के 44वें वंशज अरूणोदय सिंह प्रतिहार मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। राजकुमारी सुनीता सिंह नीमराणा किला के विशिष्ट आतिथ्य में संपन्न कार्यक्रम में पूरे दिल्ली एनसीआर के राजपूतों ने भाग लिया। अरूणोदय सिंह ने कहा कि महापुरूष सबके लिए बराबर होते है, पर उनकी मूल पहचान के साथ छेड़छाड़ करने का दुष्कृत्य कतई बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। प्रेम नारायण शास्त्री ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। राजकुल संस्थान के अध्यक्ष नारायण सिंह एवं अनिल सिंह गौड़ ने सबका आभार जताया।

'महिला स्वावलंबन दीपावली प्रदर्शनी मेले' का आयोजन

जयपुर स्थित राजपूत सभा भवन में 7 से 9 अक्टूबर तक तीन दिवसीय 'महिला स्वावलंबन दीपावली प्रदर्शनी मेले' का आयोजन किया गया। मेले के अंतिम दिन अतिरिक्त पुलिस आयुक्त राज कंवर तथा चुनाव विभाग में एकाउंट्स ऑफिसर नीलम राठौड़ ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया। उन्होंने महिला उद्यमियों से उनके उत्पाद, व्यापारिक गतिविधियों एवं प्रगति पर चर्चा की तथा उनके प्रयासों की सराहना कर उनका उत्साहवर्द्धन किया। सभा के अध्यक्ष राम सिंह चंदलाई ने सभी अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया और मेला प्रतिभागियों को शुभकामनाएं दी।

मारवाड़ के इतिहास को पाठ्यक्रम में शामिल करने की मांग

11 अक्टूबर को राजस्थान समग्र शिक्षक संघ के प्रदेश अध्यक्ष एवं भारतीय इतिहास संकलन समिति के सिरोही जिला अध्यक्ष डॉक्टर उदय सिंह डिगार ने मारवाड़ क्षेत्र के इतिहास को स्कूल एवं कॉलेज शिक्षा के पाठ्यक्रम में उचित स्थान देने की मांग उठाई। उन्होंने प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री एवं शिक्षा मंत्री को ज्ञापन प्रेषित कर मारवाड़ क्षेत्र के गौरवशाली इतिहास की पाठ्यक्रम में उपेक्षा करने का आरोप लगाते हुए उसे उचित स्थान दिलवाने की मांग की और बताया कि चंद्रावती नगरी, जो कि पश्चिमी भारत की व्यापारिक राजधानी थी, सिरोही जिले के आदिवासी अंचल में लिलुड़ी बड़ली नामक स्थान, जिसे क्षेत्र में जलियांवाला बाग के नाम से भी जाना जाता है, दत्ताणी के युद्ध में महाराव सुरताण की सेना द्वारा दिल्ली के बादशाह अकबर की सेना को करारी शिकस्त जैसे महत्वपूर्ण स्थानों व घटनाओं को इतिहास के पाठ्यक्रम में यथोचित स्थान नहीं मिला है। इसी प्रकार मारवाड़ क्षेत्र के मंडोवर (मंडोर), मालाणी, पोंगल, लोद्रवा, जाबालिपुर (जालौर), श्रीमाल (भीनमाल), सत्यपुर (सांचौर), सुभद्रार्जुन (भाद्राजून), पलिकापुरी (पाली), नाडोलनगरी, सांडेराव, वशिष्ठपूर (बसंतीदुर्ग), पिंडर वाटिका (पिंडवाड़ा) समेत दर्जनों प्राचीन व ऐतिहासिक स्थलों को पाठ्यक्रम में पढ़ाए जाने की आवश्यकता जताई। उन्होंने अवगत करवाया कि आबू इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व का त्रिवेणी संगम रहा है। प्राचीन नव कोटि मारवाड़ की गाथाएं, मारवाड़ क्षेत्र के गौ भक्तों, प्रकृति प्रेमी एवं संस्कृति के संवाहक लोक देवताओं का इतिहास व महापुरुषों के प्रेरणादायक जीवन चरित्र को पाठ्यक्रम में शामिल करने से भावी पीढ़ी को प्रेरणा मिल सकेगी।

(पृष्ठ एक का शेष)

आत्मा ही...

अपने अंदर जाएंगे तो हमको सब कुछ उपलब्ध हो जाएगा और वह परमात्मा तक को हमसे अलग नहीं रहने देगा। रामायण में तो यहां तक कहा है कि जो भगवान को पहचान लेता है, वह भगवान बन जाता है। इसलिए मेरे युवा साथियों! भगवान बनो। उसके लिए जो कुछ भी प्रयत्न किया जा सकता है, अवश्य करें।

विजयादशमी पर्व के उपलक्ष में आयोजित पथ प्रेरणा यात्रा प्रातः 10:00 बजे शस्त्र पूजन के पश्चात नागणेची माता मंदिर से प्रारंभ होकर गांधी चौक, तनसिंह सर्किल होते हुए रानी रूपादे संस्थान पहुंची। इस दौरान विभिन्न स्थानों पर शहरवासियों द्वारा स्वागत द्वार लगाकर एवं पुष्प वर्षा करके यात्रा का स्वागत किया गया। शिक्षाविद कमल सिंह महेचा ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि इस प्रकार की यात्रा न केवल हमारे अनुशासन को प्रदर्शित करती है, बल्कि सभी समाजों के साथ सद्भाव का भी संदेश देती है। रावत त्रिभुवन सिंह ने यात्रा में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष सहयोग देने वाले सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में भाजपा नेता खुमान सिंह बालासर, स्वरूप सिंह खारा, उगम सिंह रानीगांव, हीर सिंह भाटी, गिरधर सिंह जसाई, कमल सिंह गेहूं, माल सिंह उण्डखा, राजेंद्र सिंह भिंयाड, गेन सिंह खारिया सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे।

विघ्न...

उन्होंने कहा कि यदि किसी परिवार में कोई एक व्यक्ति भी ऐसा निश्चय कर ले तो उसका बहुत असर होता है। हम दृढ़ निश्चय के साथ परिवार में अपनी बात रखें तो निश्चित रूप से प्रभाव पड़ता है। कोई भी एक काम पकड़कर उसको तत्परता से और बिना विरोध की परवाह किए करते जाएं तो निश्चित रूप से सफलता मिलती है। भगवान से यही प्रार्थना करें कि वे हमको ऐसी ताकत दें कि हम अपने निश्चित किए मार्ग पर निरंतर चलते रहें।

मानवता को..

अर्थात् जब कोई व्यक्ति श्रेष्ठ कार्य करता है तो उसका अनुसरण उसके पीछे आने वाली पीढ़ियां करती हैं, उसका अनुसरण समाज के व्यक्ति करते हैं। लेकिन यदि श्रेष्ठ व्यक्ति गलत कार्य करेगा तो संसार भी गलत कार्य करने लग जाएगा। हम श्रेष्ठ थे लेकिन जब हमने श्रेष्ठ कर्म करना छोड़ दिया उसी दिन से जो संसार हमारा अनुकरण करता था, जो हमारी ओर देखा करता था उसने भी श्रेष्ठ कर्म करने छोड़ दिए। इसलिए संसार में यह जो पतनावस्था आ रही है, पूरी मानव जाति के अंदर जो अपसंस्कृति फैल रही है उसको रोकने का दायित्व हमारा है और उसी दायित्व को निभाने के लिए हमें तैयार करने का प्रयास श्री क्षत्रिय युवक संघ कर रहा है।

मालवाड़ा में सरस्वती विद्यालय के प्रांगण में आयोजित शिविर में जालौर, सिरोही और पाली जिलों के विभिन्न गांवों से स्वयंसेवकों ने भाग लिया। शिविर के दौरान सुखराम बिश्नोई (मंत्री, राजस्थान सरकार), नारायण सिंह देवल (विधायक रानीवाड़ा), हिन्दू सिंह दुठवा (प्रधान प्रतिनिधि चितलवाना), प्रदीप सिंह देवल (सरपंच प्रतिनिधि मालवाड़ा) सहित विभिन्न गणमान्य लोगों ने शिविर स्थल पहुंचकर संघप्रमुख श्री से भेंट की एवं शिविर की कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी प्राप्त की। 5 अक्टूबर को सभी शिविरार्थी निकटवर्ती तीर्थ सुंधामाता मंदिर पहुंचे तथा दर्शन किए। संभाग प्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी सहयोगियों सहित शिविर में उपस्थित रहे। शिविर व्यवस्था का प्रबंध मालवाड़ा के समाजबंधुओं द्वारा किया गया।

बाड़मेर संभाग के शिव प्रांत के गडरा रोड स्थित ऑक्सफोर्ड पब्लिक स्कूल में भी एक माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर इसी अवधि में संपन्न हुआ। शिविर का संचालन करते हुए केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने शिविरार्थियों से कहा कि हम पूज्य श्री तन सिंह जी की पीड़ा से पीड़ित होकर यहां आए हैं। यहां आकर उनकी पीड़ा हमारे में जागृत हुई है, चाहे हम जानें या नहीं। जब पर्वत में पीड़ा फूटती है तो ज्वालामुखी का रूप लेता है। हम सभी पूज्य श्री तन सिंह जी की पीड़ा से तपकर अपने आप को ज्वालामुखी बनाने के लिए साधना करने हेतु यहाँ एकत्रित हुए हैं। उन्होंने कहा कि संघ के शिविरों में हमें जो प्रेम और आत्मीयता का बन्धन प्राप्त हुआ वही हमें बाँध कर रखता है। उसी प्रेम बन्धन में रहकर हमने अपने पूर्वजों के गुण, गौरवमयी इतिहास, गौरवमयी संस्कृति के बारे में जाना तथा उसे अपने जीवन में उतारने का प्रयास किया। संघ हमारे अपनत्व को जाग्रत करने का कार्य करता है, तभी तो हम देखते है कि खेल-खेल में लगी चोट पर गुस्सा न होकर प्रेम से आकर बैठ जाया करते है, यही अपनत्व है। यही तप और ज्ञान संघ हमारे में जगाता है और हम दूसरे की पीड़ा से व्यथित होने लगते हैं। हम बड़े भाग्यशाली हैं कि हमारा मिलन श्री क्षत्रिय युवक संघ से हुआ है। अब हम हर गांव, हर ढाणी तक पूज्य श्री तन सिंह जी की बात को शाखाओं के माध्यम से पहुँचाये तभी यहां पाया हुआ शिक्षण सार्थक होगा। शिविर के छठे दिन पूरे शिविर ने मुनाबाव बॉर्डर का भ्रमण किया। शिविर में गडरा रोड, बिजावल , जयसिंधर, समद का पार, धारवी, भियाड़, चोहटन, बाडमेर आदि स्थानों से 120 स्वयंसेवको ने संघ का माध्यमिक स्तर का प्रशिक्षण प्राप्त किया। व्यवस्था का जिम्मा स्थानीय लोगों ने मिलकर संभाला।

(पृष्ठ तीन का शेष)

विजयादशमी...

गाजियाबाद में वसुंधरा क्षेत्र में निर्वाण फाउंडेशन कार्यक्रम रखा गया। फाउंडेशन के संस्थापक वेदप्रकाश सिंह सहित फाउंडेशन के सदस्यों व कॉलोनी वासियों ने शस्त्र व शास्त्र का पूजन किया। अहमदाबाद में राजपूत विद्या सभा द्वारा गोता स्थित राजपूत समाज भवन में कार्यक्रम आयोजित हुआ। अहमदाबाद गांधीनगर प्रांत द्वारा मेघानीनगर में विजयादशमी पर्व मनाया गया जिसमें प्रांत प्रमुख दिग्विजय सिंह पलवाड़ा ने पर्व की महत्ता के बारे में बताया। गांधीनगर में कच्छ काठियावाड़ राजपूत संस्था द्वारा भी विजयदशमी पर्व मनाया गया जिसमें राजपूत आईएएस अकेडमी के अशोक सिंह परमार मौजूद रहे। क्षत्रिय संगठन खेड़ा द्वारा हाई स्कूल खेड़ा में कार्यक्रम रखा गया। बरोड़ा राजपूत समाज की संस्थाओं द्वारा भी राजपूत समाज भवन में विजयादशमी पर्व मनाया गया।

पाली में दिवेर नाल के खीमज माताजी मंदिर प्रांगण में भी सोलंकी राजवंश के द्वारा शस्त्र पूजन किया गया। इस दौरान छैल सिंह मेवी, मानवेंद्र सिंह बागोल, जितेन्द्र सिंह मगरतलाव, गोविंद सिंह निपल, गजेंद्र सिंह माडपुर, श्रवण सिंह गुड़ा आसकरण सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे। श्री राजपूत सभा जयपुर के तत्वावधान में राजपूत सभा भवन में विजयादशमी पर्व मनाया गया जिसमें शस्त्र और शास्त्र पूजन का कार्यक्रम विधि विधान से संपन्न हुआ। सभा के महामंत्री बलवीर सिंह हाथोज कार्यकताओं व पदाधिकारियों सहित उपस्थित रहे। मां करणी युवा संगठन द्वारा हर वर्ष की भाति इस विजयादशमी को भी शस्त्र व शास्त्र पूजन कार्यक्रम का आयोजन संत सोमेश्वर गिरी महाराज व राजऋषि समता राम महाराज के सानिध्य में जोगमाया मंदिर, ओम नगर जोधपुर कैंट रेलवे स्टेशन के पास किया गया। संगठन के संरक्षक गुलाब सिंह डांवरा, लादू सिंह बीजवाडिया, देवेंद्र सिंह चिंडालिया, जीतू सिंह बारा, अजीत सिंह मेड़तिया, मान सिंह खींची एवं समस्त कॉलोनीवासी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

राजस्थानी राजपूत परिषद अहमदाबाद के तत्वावधान में मंगल पांडे भवन ओढव, अहमदाबाद में दशहरा स्नेह मिलन आयोजित हुआ। दुर्जन सिंह सोढा ने बताया कि 2013 में राजस्थानी राजपूत परिषद का गठन किया गया और तब से संस्था समाज हित में कार्य कर रही है। राजस्थान से अहमदाबाद आने वाले छत्तीस कौम के लोगों के रुकने के लिए संस्था द्वारा एक भवन भी लिया गया है जिसमें अब तक 6500 से अधिक मरीजों को निःशुल्क रहने व भोजन की सुविधा दी जा चुकी है। महंत प्रताप पुरी ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि हमारा घर आत्मा है और उसे साफ सुथरा बनाए रखने पर ध्यान अवश्य देना चाहिए। मदन सिंह राजमथाई, स्वरूप सिंह खारा, एडवोकेट रूप सिंह चौहटन, डॉ शक्ति सिंह देवड़ा, अनिरुद्ध सिंह झाला ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया और सभी ने समाज हित में यथासंभव सहयोग करने की बात कही। हनवंत सिंह मिठडी ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। ईश्वर सिंह ढीमा ने कार्यक्रम का संचालन किया। राजस्थान राजपूत परिषद मुंबई का 41वां दशहरा स्नेहमिलन मेवाड़ वाटिका मीरा रोड़ में 9 अक्टूबर को सुबह 10 बजे ट्रस्ट बोर्ड चैयरमेन रतन सिंह तूरा व अनोप सिंह करड़ा की उपस्थिति में आयोजित हुआ। कार्यक्रम को हैदराबाद राजपूत परिषद के अध्यक्ष राम सिंह चारनीम, रानीवाड़ा विधायक नारायण सिंह देवल, पूर्व नगर सेवक विक्रम प्रताप सिंह, जेएनवीयू छात्र संघ पूर्व अध्यक्ष रवींद्र सिंह भाटी, वर्तमान अध्यक्ष अरविंद सिंह भाटी, मोतीसिंह फलसूंड, विधायक गीता जैन, प्रताप सरनायक व राज के पुरोहित ने संबोधित किया। सभी ने संगठित होकर समाज हित में कार्य करने की आवश्यकता जताई। श्री क्षत्रिय युवक संघ के मुंबई प्रांत प्रमुख रणजीत सिंह आलासन ने स्वयंसेवकों सहित उपस्थित रहकर व्यवस्था में सहयोग किया। गुजरात में साणंद में श्री क्षत्रिय युवक संघ मध्य गुजरात संभाग, श्री राजपूत विकास संघ - साणंद और करणी सेना के संयुक्त उपक्रम में विजयादशमी मनाई गई। साणंद के दरबारगढ़ से वाहन रैली निकाल कर साणंद नगर देवी श्री हजारी माता जी के मंदिर प्रांगण में स्थित शमी के वृक्ष के नीचे साणंद ठाकुर ध्रुवसिंह वाघेला के साथ सभी ने शास्त्र, शस्त्र और शमी का पूजन किया। संभागप्रमुख अणदुभा काणेटी, वरिष्ठ स्वयंसेवक दीवान सिंह काणेटी, नटूभा वाघेला गोधावी, हकुभा वाघेला, दशरथसिंह, जयपालसिंह सहित अनेकों समाजबंधु कार्यक्रम में उपस्थित रहे। साणंद तहसील के काणेटी गांव की बालक शाखा के स्वयंसेवकों ने भी शास्त्र, शस्त्र और शमी का पूजन किया। कार्यक्रम के अंत में सामूहिक भोज भी रखा गया। इनके अतिरिक्त वांसणा (इयावा), लेखंबा और दुदुका में भी कार्यक्रम आयोजित हुए। 9 अक्टूबर को अखिल भारतीय क्षत्रिय राजपूत महासंघ द्वारा शास्त्र एवं शस्त्र पूजन कार्यक्रम दक्षिणी दिल्ली के उत्तम नगर में आयोजित हुआ।

जायल मंडल में सम्पर्क यात्रा का आयोजन

नागौर संभाग के जायल मंडल में 9 अक्टूबर को संपर्क यात्रा का आयोजन हुआ। वरिष्ठ स्वयंसेवक भवानी सिंह मुंगेरिया व अन्य सहयोगी सर्वप्रथम जोधियासी पहुंचे जहां नागणेच्या माता जी मंदिर में बैठक रखी गई जिसमें कुछ समय पूर्व जोधियासी में संपन्न प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर के शिविरार्थियों तथा स्थानीय सहयोगियों से वार्ता की गई। इसके बाद ग्राम पंचायत चाउ, जालनियासर, गुगरियाली, उंचाईड़ा में संपर्क बैठकें रखी गई। इन बैठकों में आगामी दिनों में किनसरिया, परबतसर तथा डीडवाना में लगने वाले शिविर की जानकारी दी गई व सबको शिविर में आने का आमंत्रण दिया गया। बैठकों के दौरान समाजबंधुओं को संबोधित करते हुए भवानी सिंह जी ने कहा कि शिविर में जो प्रशिक्षण दिया जाता है उसका अभ्यास जीवन में सतत रूप से होता रहे, इसलिए शाखाओं का लगना आवश्यक है। शाखा वो माध्यम है जो हमें सजग और सक्रिय बनाए रखता है। इस प्रकार की निरन्तरता और नियमितता के अभ्यास से हमारे सद्संस्कारो का विकास होता है और सामाजिक भाव सुदृढ़ होता है। सम्पर्क यात्रा के दौरान नागौर प्रांत प्रमुख उगम सिंह गोकुल सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। यात्रा के अंतिम पड़ाव में उंचाईड़ा में सभी से संवाद किया गया व सहभोज किया गया।

काबावत (परमार) वंश के 24 गांवों का स्नेहमिलन समारोह संपन्न

काबावत (परमार वंश) राजपूतों के 24 गांवों का स्नेह मिलन समारोह आजबर गांव में 3 अक्टूबर को आयोजित हुआ। पूरणसिंह आकोली ने बताया कि हर साल होम अष्टमी के दिन माता कुलेटी अबुर्दा देवी का हवन अनुष्ठान किया जाता है। तत्पश्चात शाम को महाप्रसादी का आयोजन किया जाता है जिसमें 24 गांवो के काबावत (परमार वंश) राजपूत भाग लेते हैं। शाम को भजन कीर्तन करते हैं व सुबह माता के दरबार मे सभा का आयोजन किया जाता है। ट्रस्ट के अध्यक्ष पूर्व आईएएस गंगासिंह काबावत ने सभा को संबोधित करते हुए समाज में एकता का संदेश देते हुए कहा कि प्रत्येक गांव से प्रत्येक व्यक्ति को अनिवार्य रूप से इस महा आयोजन में भाग लेना चाहिए। सभी की व्यस्तताएं होती हैं लेकिन समाज के लिए समय निकालना पड़ता है। सभा में मंदिर की व्यवस्था से संबंधित विभिन्न प्रस्ताव भी पारित किए गए। इस अवसर पर चंद्रवीर सिंह, शेरसिंह चांदुर, सुरेन्द्रसिंह माण्डोली, जनकसिंह बुगांव, जबरसिंह माण्डोली, राजेन्द्रसिंह आकोली, गजेन्द्रसिंह आकोली, रामसिंह पुनक, अर्जुनसिंह बिबलसर, पूरणसिंह बिबलसर, देवीसिंह देवाडा, मानसिंह देवाडा, शम्भुसिंह गोलका, उतमसिंह वाडका, शैतानसिंह देलदरी, हडमतसिंह देलदरी, जोगसिंह सरत, पदमसिंह सरत, राजुसिंह रानीवाडा, राजुसिंह बुगांव, उगमसिंह कोलर सहित अनेकों समाजबन्धु उपस्थित रहे।

राणा पूंजा की जन्मस्थली पानरवा में जयंती मनाई

राणा पूंजा जी सोलंकी की जयंती उनकी जन्मस्थली पानरवा में 5 अक्टूबर को सर्व समाज द्वारा भव्य रूप में मनाई गई। राणा मनोहर सिंह पानरवा (राणा पूंजा जी के 16वें वंशज) ने बताया कि जयंती कार्यक्रम में समस्त पानरवा वासी व सर्व समाज के जन प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। श्री क्षत्रिय युवक संघ के संभागप्रमुख ब्रजराज सिंह खारड़ा ने पानरवा के सोलंकी राजवंश के इतिहास का संक्षिप्त परिचय दिया। देहात जिला मंत्री ओबीसी मांगीलाल पटेल व लालू राम खराड़ी ने कहा कि राणा पूंजा क्षत्रिय शासक थे जो भीलों का नेतृत्व करने के कारण भीलू राणा कहलाए। उन्होंने राणा पूंजा जी का इतिहास बताते हुए मुगलों के विरूद्ध हल्दीघाटी में भोमट द्वारा मेवाड़ को दिए सहयोग की जानकारी भी दी। सोलंकी राजवंश व भोमट क्षत्रिय महासभा ने मिलकर कार्यक्रम का

दिवेर नाल, पाली

पानरवा

आयोजन किया। कार्यक्रम में हजारों की संख्या में लोग सम्मिलित हुए। कार्यक्रम के प्रारंभ में राणा मनोहर सिंह जी पानरवा व भंवर परीक्षित सिंह पानरवा ने सभी के साथ शस्त्र पूजन किया। कार्यक्रम में आदिवासी समाज से भूतपूर्व सरपंच देवी लाल गरासिया, सरपंच वक्तु देवी, धनराज गरासिया, नारायण लाल खराड़ी, पन्नालाल खराड़ी, भोपाल सिंह सुवावत, काला भोपा अंजरोली, ललित खराड़ी, भूपेंद्र सिंह सोलंकी, जयपाल सिंह सोलंकी सहित अनेकों गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। भंवर परीक्षित सिंह सोलंकी ने बताया कि जीबीएच अमेरिकन हॉस्पिटल और अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा, मेवाड़ के संयुक्त तत्वावधान में राणा पूंजा जी सोलंकी की स्मृति में निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन भोमट क्षेत्र में किया जाएगा जिसके अंतर्गत प्रत्येक व्यक्ति का 1 लाख रुपये तक का इलाज बिल्कुल निःशुल्क रहेगा। कृष्णा बांकावत सोलंकी ने सभी का आभार व्यक्त किया। सभी अतिथियों को राणा पूंजा जी की तस्वीर भेंट की गई। कार्यक्रम के दौरान तलवारबाजी का प्रदर्शन भी किया गया। पाली में नयागांव दिवेर नाल स्थित खीमज माता मंदिर के प्रांगण में भी राणा पूंजा की जयंती 5 अक्टूबर को समारोह पूर्वक मनाई गई जिसमें राणा पूंजा के वंशज हनुमान सिंह, मारवाड़ जंक्शन विधायक खुशवीर सिंह और रानी कृषि मंडी के पूर्व चेयरमैन गिरधारी सिंह मेड़तिया ने पूंजा जी की वीरता और त्याग को नमन करते हुए कहा कि मेवाड़ के स्वतंत्रता संघर्ष में वीर पूंजा जी सोलंकी का योगदान अविस्मरणीय है। ऐसे वीर के प्रति सभी को श्रद्धा रखनी चाहिए लेकिन उनकी पहचान से छेड़छाड़ का कोई भी कृत्य निश्चित रूप से निंदनीय है। कार्यक्रम को मानवेंद्र सिंह तथा श्रवण सिंह ने भी संबोधित किया। विधायक खुशवीर सिंह ने सोलंकी राजवंश के इतिहास के पैनोरमा के निर्माण हेतु विधायक कोष से राशि प्रदान करने की घोषणा की। राजेंद्र सिंह ने कार्यक्रम का संचालन किया।

महारावल दूदा जी व तिलोकसी का शौर्य दिवस मनाया

जैसलमेर के देगराय मंदिर में जैसलमेर के द्वितीय शाके के महानायक महारावल दुर्जनशाल व वीरवर तिलोकसी का बलिदान दिवस 5 अक्टूबर को मनाया गया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के संभागप्रमुख तारेंद्र सिंह झिनझिनयाली ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि याद उन्हें किया जाता है जो अपने जीवन में कुछ कर जाते हैं। धरती मां की आन-बान और शान

व गौरव के लिए हमारे जिन पूर्वजों ने अपना बलिदान दिया उन्हीं का आने वाली पीढ़ियां स्मरण करती हैं। हमें दुदा जी और तिलोकसी जैसे हमारे पूर्वजों के गौरवमयी इतिहास से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाना चाहिए। उन्होंने बताया कि प्रथम बार श्री क्षत्रिय युवक संघ के द्वारा इसी स्थान पर भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया था और उसी श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए समाज द्वारा ऐसे कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं, जो सराहनीय है। बदलते परिवेश में मानवीय मूल्य खोते जा रहे हैं, धीरे धीरे वो पीढी समाप्त होती जा रही है जिसे अपने इतिहास के बारे में जानकारी है। इस क्षेत्र में कम ही लोग रुचि रखते हैं परंतु इस स्थिति को हमें सचेत रहकर बदलने की जरूरत है। इसके लिए अपने बच्चों को संघ के शिविरों व शाखाओं में भेजें जिससे वे अपने मानसिक, बौद्धिक व शारीरिक विकास के साथ इतिहास की जानकारी भी प्राप्त कर सकें। कार्यक्रम से पूर्व सांवता स्थित पावरग्रिड बिजली घर के अंदर महारावल दूदोजी स्मारक पर जाकर अर्चना की गई। डेलासर मठाधीश मंहत महादेवपुरी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। गोविन्द सिंह भैंसड़ा द्वारा कार्यक्रम की भूमिका प्रस्तुत की गई। ओला सरपंच रघुवीर सिंह व दीप सिंह रणधा द्वारा दूदोजी को काव्य द्वारा श्रद्धांजलि दी गई। सुनीता भाटी ने जसोड़जी व जसोड़जी के पांचो पुत्रों महारावल दूदोजी, वीरवर तिलोकसीजी, सागण, बांगण व आसकरण के संबंध में जानकारी दी। जैसलमेर प्रधान लख सिंह चांधन ने दूदोजी स्मारक के लिए समाज से सहयोग करने का आह्वान किया। स्मारक के लिए समाज बंधुओं द्वारा आर्थिक सहयोग की घोषणा भी की गई। पूर्व जिला प्रमुख अंजना मेघवाल ने महिला शिक्षा पर जोर दिया व स्मारक के लिए तन मन धन से सहयोग देने का भरोसा दिलाया। पूर्व विधायक छोटू सिंह भाटी ने समाज के एकजुट रहने व युवाओं की नशा मुक्ति पर पर जोर दिया। किशन सिंह भादरिया, महिपाल सिंह रतनू बोनाडा, भैंसड़ा सरपंच विजय सिंह व प्रयाग सिंह भैंसड़ा ने भी अपने विचार रखे। समस्त भैंसड़ा व बोनाड़ा ग्राम पंचायत वासियों द्वारा मिलकर कार्यक्रम व्यवस्था की गई। अगला आयोजन भादरिया ग्रामवासियों द्वारा आयोजित करवाने का निर्णय भी किया गया। जोधपुर शहर में हनवंत राजपूत छात्रावास परिसर में लगने वाली शाखा में भी वीरवर महारावल दूदा जी व तिलोकसी का शौर्य दिवस आयोजित किया गया। लोकेंद्र सिंह गोरड़ीया द्वारा दोनों महानायकों का जीवन परिचय दिया गया। अवतार सिंह देदूसर ने वीरों के जीवन से प्रेरणा लेते हुए श्री क्षत्रिय युवक संघ के मार्ग पर चलने की बात कही। जेएनवीयू छात्रसंघ अध्यक्ष अरविंद सिंह अवाय ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यकम का संचालन जसवंतसिंह भैंसड़ा ने किया। कार्यक्रम में लगभग सौ समाजबंधु उपस्थित रहे।

शहीद राजेंद्रसिंह भाटी का तृतीय बलिदान दिवस कार्यक्रम आयोजित

शहीद राजेंद्र सिंह रा उ मा वि श्री मोहनगढ़ के प्रांगण में शहीद राजेंद्रसिंह भाटी का तृतीय बलिदान दिवस 28 सितंबर को मनाया गया। महंत निरंजन भारती महाराज बालेटा धाम के सानिध्य में आयोजित इस कार्यक्रम में प्रताप सिंह सोलंकी (जिला प्रमुख जैसलमेर), श्रीमती बलवीर तिवारी (सीबीईओ जैसलमेर), सांगसिंह भाटी (पूर्व विधायक जैसलमेर), अंजना मेघवाल (पूर्व जिला प्रमुख जैसलमेर), उमेश सिंह तोमर (उपाध्यक्ष बीसूका एवं पूर्व अध्यक्ष यूआईटी जैसलमेर), मूलाराम चौधरी (पूर्व प्रधान जैसलमेर), सुनीता भाटी (पूर्व प्रधान सांकड़ा), छुगसिंह सोढा, कमलकिशोर व्यास (एडीईओ माध्यमिक जैसलमेर), रमेश चंद्र सुथार (सीबीईओ मोहनगढ़) एवं मोहनगढ़ सरपंच रुकमा कंवर सहित अनेकों गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। सभी ने शहीद की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर मौन धारण कर श्रद्धांजलि दी व राष्ट्रगान की धुन के साथ पुलिस थाना मोहनगढ़ की तरफ से गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। इस अवसर पर शहीद राजेंद्रसिंह रा.उ.मा.वि.विद्यालय की नामकरण पट्टीका का अनावरण भी किया गया तथा शहीद परिवारों को सम्मान स्वरूप स्मृति चिन्ह भेंट किए गए। अमर शहीद राजेंद्र सिंह का जीवन परिचय सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य राणाराम सुथार द्वारा दिया गया। सेवानिवृत्त कैप्टन गोवर्धन सिंह ने शहादत के दिन का विस्तृत विवरण दिया। सभी वक्ताओं ने शहीद स्मारक की गतिविधियों में तेजी लाने की बात कही तथा हर संभव मदद का आश्वासन दिया साथ ही शहीदों के प्रति हमारी जिम्मेदारी समझने एवं सदैव सहयोग की भावना पर बल दिया।

सूरत शाखा में अधिकतम संख्या दिवस कार्यक्रम आयोजित

सूरत प्रांत के सूरत शहर मंडल की पृथ्वीराज शाखा में 2 अक्टूबर को सामूहिक रूप में अधिकतम संख्या दिवस कार्यक्रम समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर स्वयंसेवकों सहित राजस्थान राजपुत समाज, राजपूत परिषद् के पदाधिकारी भी उपस्थित रहे व आगामी विजय दशमी को होने वाले सामाजिक कार्यक्रम की जानकारी दी। सूरत प्रांत प्रमुख खेतसिंह चादेसरा ने नवरात्रि पर्व मे मां दुर्गा की उपासना के बारे में बताया। कार्यक्रम में 293 समाजबंधु उपस्थित रहे।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org